हिन्दी विभाग
स्नातक द्वितीय (II)
पत्र संख्या - 03

नयी कविता की प्रवृत्तियाँ

(1) जीवन के प्रति आस्था: नयी कविता में जीवन का पूर्ण स्वीकार कर के उसे भोगने की लालसा है। मनोविज्ञान द्वारा उद्घाटित सत्यों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि हम क्षणों में जीते हैं और क्षणों की अनुभूतियाँ सम्पूर्ण जीवन की अनुभूति की साधक है। क्षणों को सत्य मान लेने का अर्थ होगा जीवन की एक-एक अनुभूति को एक-एक व्यथा को एक-एक सुख को सत्य मानकर जीवन को सघन रूप में स्वीकार करना।

नयी कविता में लघु मानवत्व की जो बात उठायी गयी है यह भी जीवन की पूर्णता के ही सन्दर्भ में उठायी गई है। यहाँ लघु मानव का अर्थ है वह सामान्य मनुष्य जो अपनी सारी संवेदना, सुख, त्रास और मानसिक यंत्रणा को लिये हुये उपेक्षित था।

नयी कविता ने जीवन को न तो एकांकी रूप में देखा है, न केवल महत्व रूप में अपितु उसने जीवन को वह चाहे किसी वर्ग का हो - चाहे व्यक्ति का हो अथवा समाज का हो जीवन को जीवन के रूप में देखा है। नयी कविता में मानव किसी वर्गीय चेतना, सिद्धांत

अथवा आदर्श की बैशाखी के सहारे चलता हुआ इसके पास नहीं आता है, अपितु वह अपने सम्पूर्ण सुख-दुःख, राग-विराग के परिवेश से संयुक्त शुद्ध मानव के रूप में आता है।

(2.) मानववाद और यथार्थवाद (मानवतावाद):-

नयी कविता मानवतावादी है किन्तु उसकी दृष्टि यथार्थवादी है। अतः उसका मानवतावाद मिथ्या आदर्श की परिकल्पनाओं पर अवलम्बित नहीं है। यह मनुष्य को किसी कल्पित सुन्दरता और मूल्यों के आधार पर नहीं अपितु उसके भीतर तड़पते दर्दों और संवेदनाओं के आधार पर जो उसके अपने सत्य हैं। बड़ा सिद्ध करती है अरी ओ ~~करुणामय~~ करुणप्रभामय में अज्ञेय ने लिखा है—

अच्छा
खंडित सत्य
सुघर नीरन्ध्र मृषा से
अच्छा
पीड़ित प्यार
अकम्पित निर्ममता से

(3.) क्षणबोध:- नयी कविता जीवन के एक-एक क्षणों को सत्य मानती है और उस सत्य को पूरी हार्दिकता और पूरी चेतना से भोगने का समर्थन करती है। उसका यह क्षणबोध शाश्वत बोध का विरोधी नहीं, अपितु उसे प्राप्त करने की यथार्थ प्रक्रिया है। क्षणों में दिखाई पड़नेवाला जीवन सौन्दर्य, क्षणों में अनुभूत होने वाली जीवन की व्यथा या उल्लास क्षणों में

लक्षित होनेवाली मनःस्थिति या बाह्य क्रियाव्यापार, क्षणों की सीमा में स्फूर्जित हो जानेवाला कोई सत्य होता नहीं है।

(4) नयी कविता और जीवन मूल्य:- नयी कविता ने जीवन मूल्यों को फिर पुनः परीक्षा की है। उसकी यथार्थवादी दृष्टि काल्पनिक, आदर्शवादी अथवा भावुकता मिश्रित मानववाद से संतुष्ट न होकर जीवन का मूल्य उसका सौन्दर्य, उसका प्रकाश जीवन में ही खोजती है। वर्तमान की गहन निराशा और बिखराव के बीच भी वह अनागत ज्योति के लिए प्रतीक्षमान है।

(5) लोक-सम्पृक्ति:- लोक सम्पृक्ति नयी कविता की एक खास विशेषता है। यह सहज लोक जीवन के करीब पहुँचने का प्रयत्न कर रही है।

प्रस्तुतकर्त्ता
बैनाम कुमार
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो०नं०-8252271041

दिनांक
[illegible]/11/2020